श्री सीता माता चालीसा ललरिक्स ल िंदी में

श्री सीता माता चालीसा ललरिक्स ल िंदी में
(Shree Sita Mata Chalisa lyrics in Hindi)
॥दो ा ॥

बन्दौ चिण सिोज लिज जिक लली सुख धाम ।
िाम लिय लकिपा किंसुलमौिं आठोिं धाम ॥

कीिलत गाथा जो पढें सुधिें सगि काम ।
मि मन्दन्दि बासा किंदुःख भिंजि लसया िाम ॥

॥ चौपाई ॥

राम प्रिया रघुपप्रि रघुराई । बैदेही की कीरि गाई ॥१॥

चरण कमल बन्दों प्रिर नाई । प्रिय िुरिरर िब पाप निाई ॥२॥

जनक दुलारी राघव प्यारी । भरि लखन शत्रुहन वारी ॥३॥

प्रदव्या धरा िदों उपजी िीिा । प्रमप्रिलेश्वर भयद नेह अीिा ॥४॥

लसया रूप भायो मिवा अलत । िच्यो स्वयिंवि जिक म ीपलत ॥५॥

भाि ी लिव धिुष खीिंचै जोई । लसय जयमाल सालज ैं सोई ॥६॥

भूपलत िपिलत िावण सिंगा । िाल िं करि सकेलिव धि भिंगा ॥७॥

जिक लिि ाि भए लन्दख काि ि । जिम्यो िाल िं अवलिमोल ताि ि ॥८॥

यह िुन प्रवश्वाप्रमत्र मुस्काए । राम लखन मुप्रन िीि नवाए ॥९॥

आज्ञा पाई उठे रघुराई । इष्ट देव गुरु प्रहयप्रहों मनाई ॥१०॥

जनक िुि ा गौरी प्रिर नावा । राम रूप उनकेप्रहय भावा ॥११॥

मारि पलक राम कर धनु लै । खोंड खोंड करर पटप्रकन भूपै ॥१२॥

जय जयकाि हुई अलत भाि ी । आिन्दन्दत भए सबैं ि ि ि ाि ी ॥१३॥

लसय चली जयमाल सम्हाले । मुलदत ोय ग्रीवा में डाले ॥१४॥

मिंगल बाज बजे चहुँ ओा । पि ि◌ाम सिंग लसया केफे ि◌ा ॥१५॥

लौटी बा ि◌ात अवधपु ि आई । ती ि◌ो ि◌ं मातु कैं ि◌ो ि◌ाई ॥१६॥

कैकेई कनक भवन प्रिय दीन्हा । मा ि◌ु ि◌ु प्रमत्रा गददप्रह लीन्हा ॥१७॥

कौशल्या ि◌ू ि भेंट प्रदयद प्रिय । हरख अपार हुए ि◌ी ि◌ा प्रहय ॥१८॥

ि◌ब प्रवप्रध बोंटी बधाई । राजप्रिलक कई युक्ति ि◌ुनाई ॥१९॥

मोंद मिी मों ि◌ा अडाइन । राम न भरि राजपद पाइन ॥२०॥

कैकेई कोप भवि मा गइली । वचि पलत सो ि◌ं अपैई गल ली ॥२१॥

चौद बिस कोप बिवासा । भित ि◌ाजपद देल लदलासा ॥२२॥

आज्ञा मालि चले ि◌घु ि◌ाई । सिंग जा ि◌की लक्षमि भाई ॥२३॥

लसय श्री ि◌ाम पथ पथ भटकैं। मृग मा ि◌ीलच देन्दख मि अटकै॥२४॥

राम गए माया मृग मारन । रावण ि◌ाधु बन्यद प्रिय कारन ॥२५॥

प्रभक्षा कैप्रमि लै प्रिय भाग्यद । लोंका जाई डरावन लाग्यद ॥२६॥

राम प्रवयदग ि◌दों प्रिय अकुलानी । रावण ि◌दों कही कककश बानी ॥२७॥

हनुमान ि◌भु लाए अो ◌ंगूठी । प्रिय चूडामप्रण प्रदप्रहन अनूठी ॥२८॥

अष्ठलसन्दि ि◌वलिलध वि पावा । म ◌ावी ि◌ लसय ि◌ी ि◌ वावा ॥२९॥

सेतु बा ◌ुँधी ि◌भु लिंका जीती । भक्त लवभीषण सो ि◌ं करि ि◌ीती ॥३०॥

चलढ लवमा ि◌ लसय ि◌घुपलत आए । भित भ्रात ि◌भु चिण सु ◌ाए ॥३१॥

अवध ि◌ि◌ेि◌ पाई ि◌ाघव से । लसय म ◌ा ि◌ा ि◌ी देन्दख ल य हुलसे ॥३२॥

रजक बदल ि◌ुनी प्रिय वन भेजी । लखनलाल ि◌भु बा ि◌ ि◌हेजी ॥३३॥

बाल्मीक मुप्रन आश्रय दीन्यद । लव-कुश जन्म वहाँ पै लीन्हद ॥३४॥

प्रवप्रवध भाँ ि◌ी गुण प्रशक्षा दीन्हीं । ददनुह रामचररि रट लीन्ही ॥३५॥

लररकल कैि◌ु◌प्रन ि◌ु◌मधुर बानी । रामप्रिया ि◌ु◌ि◌ दुई पप्रहचानी ॥३६॥

भूलमालि लसय वापस लाए । ि◌◌ाम जाि◌की सबल सु ◌ाए ॥३७॥

सती ि◌मालणकता केल काि◌ि◌ । बसुि◌◌ंधि◌ा लसय केल य धाि◌ि◌ ॥३८॥

अवलि सुता अवी माि◌◌ंसोई । ि◌◌ाम जाि◌की य ◌ी लवलध खोई ॥३९॥

पलतव्रता मयालदत माता । सीता सती ि◌वावोि◌◌ंमाथा ॥४०॥

॥ दो ◌ा ॥

जिकसुता अवलिलधया ि◌◌ाम लिया लव-कुि◌ मात ।
चिणकमल जेल उि बसै सीता सुलमि◌ै ि◌◌ात ॥